लिंगाष्टकम् (ब्रह्ममुरारि सुरार्चित लिंगम्) अर्थ सहित: पूरा पाठ, हिंदी अर्थ और शिवलिंग की कथा

26 नवंबर 2026 • पढ़ने में 7 मिनट स्तोत्र शिवलिंग शिव भक्ति

लिंगाष्टकम् शिवलिंग की आठ श्लोकों की स्तुति है, जिसकी हर पंक्ति के अंत में आता है: "तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्", उस सदाशिव लिंग को मैं प्रणाम करता हूँ। नीचे **लिंगाष्टकम् अर्थ सहित**: पूरा पाठ, हर श्लोक का सरल हिंदी अर्थ, और शिवलिंग की उत्पत्ति की कथा का वीडियो है।

लिंगाष्टकम्: पूरा पाठ (8 लिपियों में)

देवनागरी | English | বাংলা | ଓଡ଼ିଆ | తెలుగు | ಕನ್ನಡ | മലയാളം | தமிழ்

ब्रह्ममुरारिसुरार्चितलिङ्गं
निर्मलभासितशोभितलिङ्गम् ।
जन्मजदुःखविनाशकलिङ्गं
तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥ १ ॥

देवमुनिप्रवरार्चितलिङ्गं
कामदहनकरुणाकरलिङ्गम् ।
रावणदर्पविनाशनलिङ्गं
तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥ २ ॥

सर्वसुगन्धिसुलेपितलिङ्गं

बुद्धिविवर्धनकारणलिङ्गम् ।

सिद्धसुरासुरवन्दितलिङ्गं

तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥ ३ ॥

कनकमहामणिभूषितलिङ्गं

फणिपतिवेष्टितशोभितलिङ्गम् ।

दक्षसुयज्ञविनाशनलिङ्गं

तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥ ४ ॥

कुङ्कुमचन्दनलेपितलिङ्गं

पङ्कजहारसुशोभितलिङ्गम् ।

सञ्चितपापविनाशनलिङ्गं

तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥ ५ ॥

देवगणार्चितसेवितलिङ्गं

भावैर्भक्तिभिरेव च लिङ्गम् ।

दिनकरकोटिप्रभाकरलिङ्गं

तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥ ६ ॥

अष्टदलोपरिवेष्टितलिङ्गं

सर्वसमुद्भवकारणलिङ्गम् ।

अष्टदरिद्रविनाशितलिङ्गं

तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥ ७ ॥

सुरगुरुसुरवरपूजितलिङ्गं

सुरवनपुष्पसदार्चितलिङ्गम् ।

परात्परं परमात्मकलिङ्गं

तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥ ८ ॥

लिङ्गाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।

शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥

लिपि बदलने से शब्द नहीं बदलते: वही संस्कृत पाठ, आपकी लिपि में (अक्षर-से-अक्षर रूपांतरण)। तमिल में छोटे अंक संस्कृत ध्वनियाँ दिखाते हैं। आवाज़ आपके फ़ोन/कंप्यूटर की अपनी मशीन-आवाज़ है; सही उच्चारण के लिए हमारे वीडियो सुनें।

सुनें (पंक्ति-दर-पंक्ति) ■ रोकें गति सामान्य

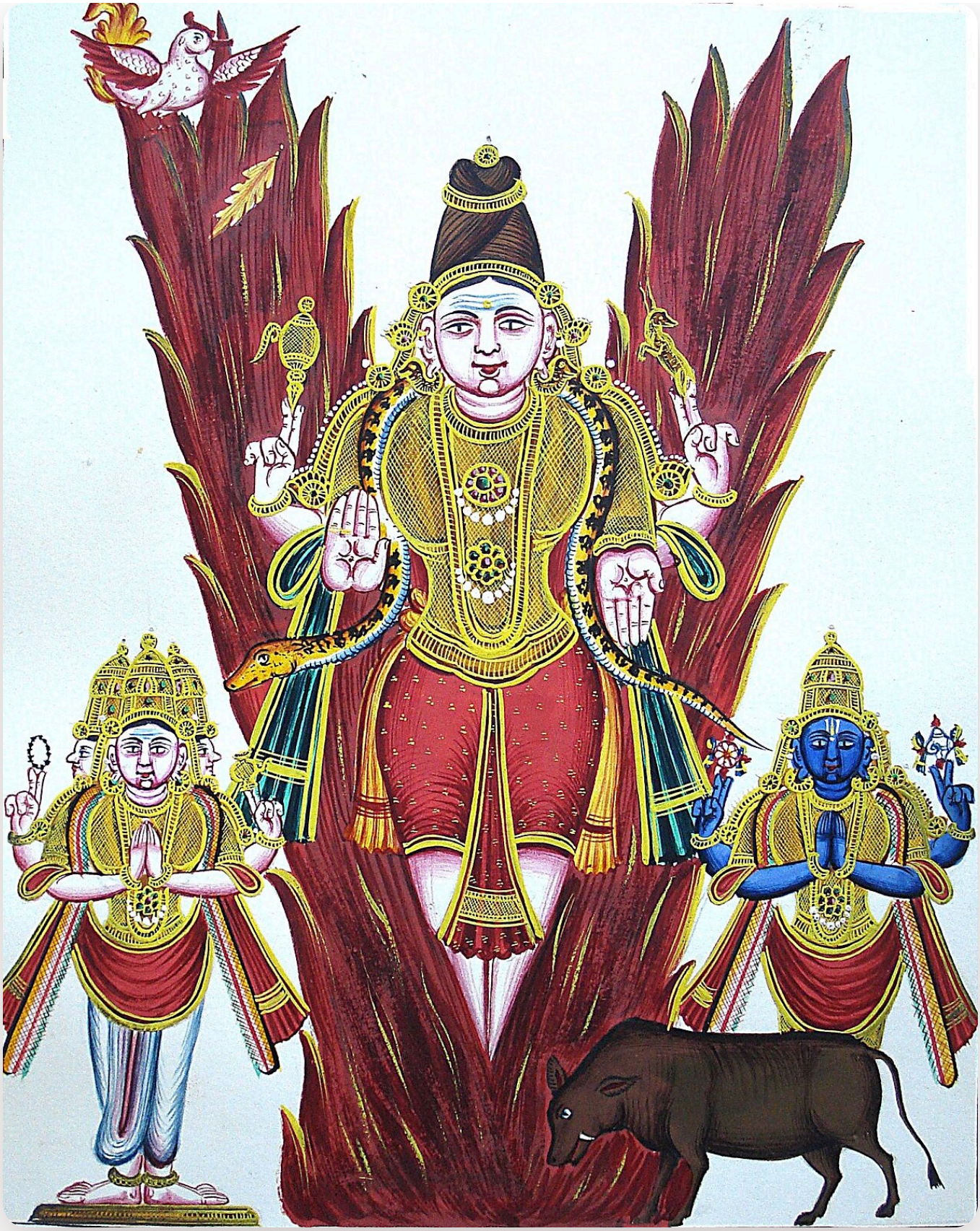

लिंगोद्भव: अग्नि स्तंभ से प्रकट शिव, लगभग 1850 की चित्रकला (public domain, Wikimedia Commons)

श्लोक और हिंदी अर्थ

ब्रह्ममुरारिसुरार्चितलिङ्गं
निर्मलभासितशोभितलिङ्गम् ।
जन्मजदुःखविनाशकलिङ्गं
तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥ १ ॥

अर्थ (1): जिस लिंग की पूजा ब्रह्मा, विष्णु (मुरारी) और देवता करते हैं, जो निर्मल, प्रकाशमान और शोभायमान है, जो जन्म से होने वाले दुखों का नाश करता है, उस सदाशिव लिंग को मैं प्रणाम करता हूँ।

देवमुनिप्रवरार्चितलिङ्गं
कामदहनकरुणाकरलिङ्गम् ।
रावणदर्पविनाशनलिङ्गं
तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥ २ ॥

अर्थ (2): जो देवताओं और श्रेष्ठ मुनियों द्वारा पूजित है, जिसने कामदेव को भस्म किया और जो करुणा का भंडार है, जिसने रावण के अहंकार का नाश किया, उस सदाशिव लिंग को प्रणाम।

सर्वसुगन्धिसुलेपितलिङ्गं
बुद्धिविवर्धनकारणलिङ्गम् ।
सिद्धसुरासुरवन्दितलिङ्गं
तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥ ३ ॥

अर्थ (3): जो सब प्रकार की सुगंधों से लेपित है, जो बुद्धि को बढ़ाने वाला है, जिसकी वंदना सिद्ध, देव और असुर सभी करते हैं, उस सदाशिव लिंग को प्रणाम।

कनकमहामणिभूषितलिङ्गं

फणिपतिवेष्टितशोभितलिङ्गम् ।

दक्षसुयज्ञविनाशनलिङ्गं

तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥ ४ ॥

अर्थ (4): जो सोने और बहुमूल्य मणियों से सजा है, जिस पर नागराज लिपटे हैं, जिसने दक्ष के यज्ञ का विनाश किया, उस सदाशिव लिंग को प्रणाम।

कुङ्कुमचन्दनलेपितलिङ्गं

पङ्कजहारसुशोभितलिङ्गम् ।

सञ्चितपापविनाशनलिङ्गं

तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥ ५ ॥

अर्थ (5): जो कुमकुम और चंदन से लेपित है, कमल की माला से सुशोभित है, जो जमा हुए पापों का नाश करता है, उस सदाशिव लिंग को प्रणाम।

देवगणार्चितसेवितलिङ्गं

भावैर्भक्तिभिरेव च लिङ्गम् ।

दिनकरकोटिप्रभाकरलिङ्गं

तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥ ६ ॥

अर्थ (6): जिसकी पूजा और सेवा देवगण करते हैं, जो भाव और भक्ति से ही प्राप्त होता है, जिसकी आभा करोड़ों सूर्यों जैसी है, उस सदाशिव लिंग को प्रणाम।

अष्टदलोपरिवेष्टितलिङ्गं
सर्वसमुद्भवकारणलिङ्गम् ।
अष्टदरिद्रविनाशितलिङ्गं
तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥ ७ ॥

अर्थ (7): जो आठ दलों (पंखुड़ियों) वाले कमल से घिरा है, जो पूरी सृष्टि की उत्पत्ति का कारण है, जो आठ प्रकार की दरिद्रता का नाश करता है, उस सदाशिव लिंग को प्रणाम।

सुरगुरुसुरवरपूजितलिङ्गं
सुरवनपुष्पसदार्चितलिङ्गम् ।
परात्परं परमात्मकलिङ्गं
तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥ ८ ॥

अर्थ (8): जिसकी पूजा देवगुरु बृहस्पति और श्रेष्ठ देवता करते हैं, जिस पर देवताओं के उपवन के फूल सदा चढ़ते हैं, जो परे से भी परे और परमात्मा स्वरूप है, उस सदाशिव लिंग को प्रणाम।

लिङ्गाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥

अर्थ (9): (फलश्रुति) जो शिव के समीप इस पुण्य लिंगाष्टक का पाठ करता है, वह शिवलोक पाता है और शिव के साथ आनंदित होता है।

शिवलिंग पूजा का अर्थ: अग्नि स्तंभ की कथा

शिव महापुराण (विद्येश्वर संहिता) के अनुसार शिव ब्रह्मा और विष्णु के बीच अनंत अग्नि स्तंभ के रूप में प्रकट हुए, और उसी अनंत ज्योति का छोटा रूप शिवलिंग है। पूरी कथा अपनी आवाज़ में:

🙏 पूरी कथा YouTube पर देखिए: अंत तक देखें, 👍 लाइक करें और 💬 कमेंट में 'ॐ नमः शिवाय' लिखें। इससे यह कथा और भक्तों तक पहुँचती है।

YouTube पर पूरा वीडियो

सब्सक्राइब करें 🔔

▶️ शिवलिंग की उत्पत्ति की कथा (14 मिनट): YouTube पर देखें

पूरा लेख: शिवलिंग की उत्पत्ति की कथा: अग्नि स्तंभ और केतकी का फूल

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न

लिंगाष्टकम् का पाठ कब करें?

शिवलिंग पर जल चढ़ाते समय, सोमवार, प्रदोष और महाशिवरात्रि पर विशेष रूप से।

"अष्ट दरिद्र" का क्या अर्थ है?

परंपरा में आठ प्रकार की कमी या दरिद्रता; श्लोक कहता है कि शिवलिंग की उपासना उनका नाश करती है।

शिवलिंग किसका प्रतीक है?

शिव के निराकार, अनंत स्वरूप का: उसी अनंत अग्नि स्तंभ का।

🔱 कथा, जाप और स्तोत्र अपनी आवाज़ में: शिव कैलाशा YouTube चैनल

रोज़ एक कथा या जाप WhatsApp पर: शिव कैलाशा WhatsApp चैनल से जुड़ें